राष्ट्रीय संसाधन केंद्र

हिंदी विषय में उच्च शिक्षा संकाय के लिए

शिक्षण में वार्षिक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (अर्पित) 2019

[Annual Refresher Programme in Teaching (ARPIT) 2019]

रीतिकालीन हिंदी साहित्य

पाठ शीर्षक :	**भूषण की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना**
पाठ लेखक :	प्रो. भारती गोरे, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद–431004 (महाराष्ट्र) drbharatigore@gmail.com
पाठ समीक्षकः	1. प्रो. अवधेश कुमार, हिंदी एवं तुलनात्मक विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 2. प्रो. अखिलेश कुमार दुबे, हिंदी एवं तुलनात्मक विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
समन्वयक	प्रो. अवधेश कुमार, हिंदी एवं तुलनात्मक विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
सहसमन्वयक	डॉ. रामानुज अस्थाना, हिंदी एवं तुलनात्मक विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

1. पाठ का प्रारूप :

'भूषण की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना' इस पाठ में 'रीतिकाल' की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में रीतिकालीन काव्य की जाँच–पड़ताल की जाएगी। घोर श्रृंगारिकता से परिपूर्ण इस काल में 'भूषण' जैसे कवि भी हुए जिन्होंने बँधी–बँधाई परिपाटी से अलग राष्ट्रीयता एवं सांस्कृतिक चेतना के महत्व को समझकर अपने काव्य के माध्यम से उसे मुखरित करने का प्रयास किया। छत्रपति शिवाजी तथा छत्रसाल बुंदेला जैसे चरित्रों का चयन कर भूषण ने अपनी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना का परिष्कार किया इसी का विवरण इस पाठ में किया जाएगा।

2. पाठ का उद्देश्य :

मध्यकाल में, समाज में सर्वत्र धर्मांधता, गुलामी, सांस्कृतिक पतन, साहित्यिक चाटुकारिता का ही साम्राज्य था। ऐसे में पतन की गर्त में धँसते जा रहे समाज में नवचेतना का संचार कर सामान्य जनमानस को सचेत करना समय की आवश्यकता थी। समय की इस आवश्यकता को भाँपकर कविराज भूषण ने छत्रपति शिवाजी तथा छत्रसाल बुंदेला जैसे युगपुरूषों से प्रभावित होकर अपने काव्य के माध्यम से राष्ट्रीय एवं सास्कृतिक चेतना के प्रचार–प्रसार का कार्य आरंभ किया। इसी राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक चेतना को पाठकों तक पहुँचाना प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य है।

3. प्रस्तावना :

रीतिकालीन काव्य घोर श्रृंगारिकता, अलंकार प्रधानता, लक्षण ग्रंथों का निर्माण, आचार्यत्व सिद्ध करने की होड़ आदि कई कारणों से चर्चा में रहा। राजनीतिक, सामाजिक–सांस्कृतिक आदि कई दृष्टियों से यह काल ख़ासा उथलपुथल भरा था। सम्राट अकबर द्वारा स्थापित सांप्रदायिक सद्भाव समाप्त हो चुका था। अब औरंगजेब की असहिष्णुता और सांप्रदायिक कट्टरता का आतंक

छाया हुआ था। औरंगजेब से पहले भी जहाँगीर और शाहजहाँ, अकबर के अत्कृष्ट शासन को परवान चढ़ाने की बजाय विलासिता में डूबे रहे। राज–काज इनकी दृष्टि में गौण तो नहीं, दोयम अवश्य रहा। शाहजहाँ की जिस कलाप्रियता का बखान किया जाता है, उसमें भी भोगविलास की प्रवृत्ति अधिक थी। इस पृष्ठभूमि पर अतिरिक्त कट्टरता अपनाने वाले औरंगजेब का उदय हुआ। उसकी हठधर्मिता और धार्मिक असहिष्णुता का भयातंक चहुँ ओर था। इस आतंक का विरोध करने का साहस किसी राजा में नहीं था। बल्कि भारत वर्ष में फैली इन छोटी–बड़ी रियासतों के तथाकथित राजा श्रृंगार में डूबे हुए थे। राजा ही नहीं, इनका सामंतवर्ग, इनके उच्चपदस्थ अधिकारी भी सिर से लेकर पैर तक विलासिता में डूबे हुए थे। वागविदग्धता, विनोदप्रियता, कलात्मक बारीकी, अवसरवादिता, स्थार्थपरकता, ऐश्वर्य–आकांक्षा और असीमित भोग इस समय के लगभग जीवनमूल्य बन चुके थे। ऐसी स्थिति में वास्तविक उच्चतम जीवनमूल्यों का ह्रसोन्मुख हो जाना स्वाभाविक था। ऐसे लोग सत्ता और धन का प्रयोग कर समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहे थे।जिनसे समाज–जागरण की उम्मीद की जाती है, ऐसे कविचार स्वर्णमुद्राओं के ऐवज में अपने आश्रयदाता की कामनाओं को उद्दीपित करते मुक्तक रचने में निमग्न थे। धर्म–संस्कृति के अविभाज्य तत्वों का उपयोग भी विलासिता को वृद्धिगत करने के लिए किया जाता था। राधा और कृष्ण तो क्या राम और सीता तक श्रृंगार लीलाओं के नायक–नायिका बन गये थे। इस पृष्ठभूमि पर भूषण का उदय हुआ। अपने युग की विभीषिका–विडंबना को वे अपनी आँखों से देख रहे थे। उन्होंने देश–देश घूमकर अपने समय की राजनीतिक, सामाजिक स्थिति, धार्मिक विवंचनाएँ, आर्थिक खस्ताहाली,सांस्कृतिक ऱ्हास और साहित्यिक विनोदप्रियता देखी थी। अतः अपने इतिहास, यथार्थ और कविता का संगम कराकर युग की वाणी को मुखर बनाना उन्हें अधिक समयोचित लगा।

4. पाठ विषय से संबंधित लेखन :

भूषण का व्यक्तिगत जीवन, उनसे जुड़ी किंवदंतियों को देखें तो उनके स्वाभिमानी व्यक्तित्व का अनुमान लगाया जा सकता है। माना कि किंवदंतियाँ विश्वसनीय नहीं होतीं लेकिन अनुमान को उनसे दिशा अवश्य मिल जाती है।

अन्तःसाक्ष्य के आधार पर कहा जा सकता है कि भूषण का जन्म त्रिविक्रमपुर में हुआ जो जमुना के किनारे बसा हुआ है, जहाँ देव बिहारी महादेव का मंदिर है आदि। भूषण को लेकर प्रसिध्द किंवदंतियों की चर्चा करें तो एक किंवदंति सामने आती है जिसके अनुसार भूषण के बड़े भाई चिंतामणि, जो दिल्ली दरबार में थे, परिवार के कमाऊ सदस्य थे। भूषण परिवार के अत्यंत आलसी और निकम्मे पुत्र थे। एक दिन भोजन में नमक कम जानकर भूषण ने अपनी भाभी से नमक माँगा तो भाभी ने जवाब दिया कि, ''हाँ, तुमने बहुत–सा नमक कमाकर रख दिया है। उसे ही ला देती हूँ।'' कहा जाता है कि भूषण ने मुँह का ग्रास उगलकर कहा कि, ''अब जब वे नमक कमाकर लावेंगे तभी इस घर में भोजन करेंगे।'' और वे गृहत्याग कर धन कमाने के लिए निकल पड़े। यह भी कहा जाता है कि बड़े भाई चिंतामणि के दिये ताने सुनकर वे धन पाने हेतु कुमाऊँ नरेश उद्योतचंद्र के पास पहुँचे। भूषण की कविता सुनकर राजा प्रसन्न हुए और उन्होंने भूषण को एक लाख रूपया और कुछ हाथी दान स्वरूप दिये। किंतु दान देते समय गर्वोक्ति की कि, ''तुम्हें आज तक ऐसा दाता न मिला होगा।'' वे नरेश की बात सुनकर आहत हुए और समस्त धन का त्याग करते हुए उन्होंने नरेश से कहा कि, ''तुम्हें भी ऐसा त्यागी न मिला होगा।''

किंवदंतियों में निहित महिमामंडन और अतिशयोक्ति की अनदेखी कर दें तो इतना अवश्य समझ में आता है कि भूषण लाचार वृत्ति के धनलोलुप प्राणी नहीं थे। उनमें स्वाभिमान कूट कूट कर भरा था और इसी की रक्षा हेतु वे हरसंभव त्याग कर सकते थे।

निःसंदेह, स्वाभिमानी भूषण अपने समय की बारीकी से परख कर रहे थे। चारों ओर छायी धर्मांधता, गुलामी, सांस्कृतिक ह्रास की स्थिति को देख रहे थे और यह भी देख रहे थे कि इसका विरोध करने वाला जातीय भावना के प्रति प्रतिबद्ध कोई व्यक्तित्व आसपास नहीं था। भूषण का देशाटन और मनोनुकूल आश्रयदाता की खोज जारी थी। तभी 12 मई 1666 को औरंगजेब की पचासवीं वर्षगांठ के अवसर पर छत्रपति शिवाजी महाराज और औरंगजेब की हुई भेंट के प्रत्यक्षदर्शी भूषण बने।

> ''सबन के ऊपर ही ठाढ़ो रहिबे के जोग,
> ताहि खरो कियो छ–हजारिन के नियरे।
> जानि गैरमिसिल गुसैल गुसा धारि उर,
> कीन्हों न सलाम न बचन बोले सियरे।।
> 'भूषन' भनत महावीर बलकन लाग्यो,
> सारी पातसाही के उड़ाय गये जियरे।
> तमक ते लाल मुख सिवा को निरखि भये,
> स्याह मुख नौरंग सिपाह मुख पियरे।।''[1]

पुरंदर की संधि के पश्चात छत्रपति शिवाजी महाराज औरंगजेब से मिलने आगरा गये थे लेकिन वहाँ औरंगजेब ने शिवाजी महाराज को अपमानित किया। इस बात को सर्वथा अनुचित जानकर छत्रपति शिवाजी क्रोधित हुए। उनका क्रोध–प्रदर्शन देखकर औरंगजेब का मुख काला और अनहोनी की आशंका से सिपाहियों के मुख पीले पड़ गए। भूषण यह सब देख रहे थे। चाटुकारिता के युग में छत्रपति के यह तेवर–''कीन्हों न सलाम न बचन बोले सियरे'' देखकर भूषण की मानों आश्रयदाता की खोज पूरी हो गई। भूषण ने कई हिंदू शासक देखे थे लेकिन छत्रपति शिवाजी जैसे स्वाभिमानी व्यक्तित्व को उन्होंने कभी देखा न था। पश्चात औरंगजेब ने छत्रपति शिवाजी को कैद कर लिया जहाँ से निकलकर वे 1666 में रायगढ़ पहुँचे। उन्हीं के पीछे–पीछे भूषण भी उनसे मिलने रायगढ पहुँचे। भूषण की कविता का श्रेष्ठत्व जानकर छत्रपति शिवाजी ने न केवल उन्हें अपार धन दिया बल्कि उन्हें अपने दरबार में कविकुलसचिव पद पर नियुक्त भी कर दिया।

कह सकते हैं कि इसी समय से भूषण–काव्य की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना वृद्धिंगत हुई।

बेशक, भूषण रीतिकाल के कवि थे अतः रीतिकालीन काव्य–विशेषताएँ उनके काव्य में भी दृष्टिगोचर होती हैं। किंतु भूषण ने परिपाटी की लकीर पीटने की अपेक्षा युग के लिए आवश्यक नवीन राष्ट्रीय चेतना का पुरस्कार करना उचित समझा। अपने युग के अनुरूप उन्होंने अलंकारशास्त्र की विवेचना अवश्य की लेकिन इसके लिए किसी सुंदरी का नखशिख वर्णन करने की अपेक्षा छत्रपति शिवाजी महाराज के चरित्र का चयन किया। भूषण ने ऐतिहासिक विवरणों को अलंकार का रूप देकर कुछ ऐसी सामग्री का निर्माण किया जो राष्ट्रीय चेतना जगाने में सहायक सिद्ध हुई। भूषण की राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन करने के लिए एक बात की चर्चा भी पर्याप्त है कि श्रृंगार की

बाढ़ से बचकर उन्होंने अपने काव्य–रस के रूप में वीर रस का चयन किया। अपनी कविता के लिए किसी नायिका का अंगप्रत्यंग वर्णन करने की अपेक्षा युगनायक का चयन कर उसकी वीरोचित कार्यप्रणाली को अपनी कविता का वर्ण्यविषय बनाया। घोर श्रृंगार के युग में यूँ प्रवाह के विपरीत जाना अपने आप में एक साहसिक कार्य था। इस साहसपूर्ण कार्य को संपन्न करने के बावजूद भूषण की राष्ट्रीय भावना और सांस्कृतिक चेतना को प्रश्नचिन्हांकित किया जाता है।

यह सत्य है कि राष्ट्रीयता शब्द हम आज जिस अर्थ में उपयोग में लाते हैं, उस अर्थ में राष्ट्रीयता भूषण–काल में प्रचलित नहीं थी। अतः उसे आज जिस अर्थ में ग्रहण किया जाता है, उस अर्थ में उसे तब प्रयुक्त नहीं किया जाता था। इसमें भी कोई संदेह नहीं कि इस भूमि पर मौर्य काल के पश्चात कोई एकछत्र साम्राज्य और सम्राट स्थिर न हो सका था।

आज राष्ट्र की संकल्पना के साथ ही एक एकसंघ भूप्रदेश आँखों के सामने साकार हो उठता है। निःसंदेह, राष्ट्र की संकल्पना चरितार्थ करने के लिए एक निश्चित भूखंड का होना अनिवार्य है। इस भूखंड पर प्रचलित भाषा, धर्म, संस्कृति, शासन व्यवस्था आदि बातें मिलकर एक ऐसे अस्तित्व का बोध कराते हैं जिससे आत्मीय लगाव का अनुभव हो, एकता की भावना का अनुभव हो। इस दृष्टि से कह सकते हैं कि, '"प्राकृतिक, भौगोलिक एकता, एक इतिहास, एक भाषा, समान साहित्य और संस्कृति एवं सभा मैत्री अथवा शत्रुता इन पाँच सिद्धांतों पर एकमत रहने की इच्छा से संगठित जनसमूह को राष्ट्र कहते हैं।"[2]

निश्चित रूप से, भूषण के समय में इस अर्थ में राष्ट्र की अवधारणा प्रचलित नहीं थी। एच. जी.वेल्स का राष्ट्र की अवधारणा को लेकर अभिव्यक्त मत यहाँ विचारणीय है। वे कहते हैं–"राष्ट्र को हम एक ऐसा समूह, संगठन या जमघट कह सकते हैं, जो विदेशी मामलों में एक होकर रहना चाहता है। वह सामूहिक रूप से अपनी आवश्यकताओं, इच्छाओं और गौरव को साधारण मानवीय भलाई की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण समझता है।"[3]

तत्कालीन समय में किसी समूह, संगठन या जमघट के अभाव में भी विधर्मी–विदेशी उत्पातकारी मुगलों की सत्ता के खिलाफ खड़े होनेवाले छत्रपति शिवाजी को अपनी कविता के नायक के रूप में चुनकर भूषण ने राष्ट्रीय चेतना का ही परिचय दिया। जिस समय औरंगजेब के असीमित अत्याचारों के कारण भारत का धर्म, भारत की संस्कृति संकट में पड़ गई थी, उस समय छत्रपति शिवाजी महाराज ने सर्वत्र व्याप्त हिंदू जाति और संस्कृति को अपने कार्य–कर्तृत्व से जागृत करने का सफल प्रयास किया। उन्हीं छत्रपति शिवाजी महाराज का चरित्र गाकर भूषण ने राष्ट्रीयता का अलख जगाने का कार्य किया। छत्रपति शिवाजी के लोकरक्षक रूप का चित्रण, वर्णन, प्रचार–प्रसार करने का कार्य भूषण ने किया। जिस दौर में देश में मुगलों का वर्चस्व स्थापित हो चुका था, उस समय सत्ता के वर्चस्व के खिलाफ आवाज उठानेवाले शिवाजी महाराज का चरित्र गान कर भूषण ने राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति की।

कवि भूषण ने राष्ट्रीयता का भाव जगाने के लिए, लोक रक्षक छत्रपति शिवाजी का वर्णन करने हेतु काव्य के विविध उपकरणों का प्रयोग किया। रस, शैली, अलंकार सभी का प्रयोग छत्रपति शिवाजी और छत्रसाल के वर्णन के लिए किया। भूषण वीर रस के युद्ध के मारू राग के गायक कवि थे। रीतिकाल के घोर श्रृंगार में उन्होंने घोषणा कर दी–

और राव राजा एक मन में न ल्याऊँ, अब

शिवा को सराहूँ की सराहूँ छत्रसाल को

इस निर्णय का कारण उनमें निहित राष्ट्रीय–सांस्कृतिक चेतना थी। यह सर्वविदित सत्य है कि राष्ट्रीय चेतनायुक्त साहित्य में अपनी प्राचीन संस्कृति और धर्म से स्वाभाविक रूप से प्रेरणा ग्रहण की जाती है। इसी को आधार बनाकर वीरों को राष्ट्र रक्षार्थ ललकारा जाता है। भूषण द्वारा भी धर्म और संस्कृति से किया प्रेरणा–ग्रहण देख उनके राष्ट्रवाद को हिंदू राष्ट्रवाद कहा जाता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसे इस तरह का लेबल लगाने की अपेक्षा यह समझना होगा कि तत्कालीन समय में हिंदू–संस्कृति प्रधान थी और उसके अनुसार राष्ट्रवाद का जो स्वरूप हो सकता था, उसकी अभिव्यक्ति भूषण द्वारा रचित काव्य में हुई है। साहित्य कोश के अनुसार ''राष्ट्रीय काव्य के अंतर्गत वह समस्त साहित्य लिया जा सकता है जो किसी देश की जातीय विशेषताओं का परिचायक हो। इस प्रकार के साहित्य में जाति का समस्त रागात्मक स्वरूप, उसके उत्थान–पतन आदि का विवरण आ सकता है। इसका होना एक प्रकार से अनिवार्य है।''[4]

भूषण ने हिंदू जाति, उसके दुर्दिन, हिंदुत्व में मची उथलपुथल आदि का न केवल सार्थक वर्णन किया बल्कि इसके रक्षक बन उभरे नायकों को अपने काव्य का नायक बनाया। अतः उनके काव्य को जातीय काव्य कहने की अपेक्षा राष्ट्रीय काव्य कहना ही अधिक उपयुक्त है। निःसंदेह, संस्कृति–धर्म–शास्त्र–पुराणों से संदर्भ जुटाकर भूषण अपने लोकनायकों विशेषतः छत्रपति शिवाजी का वर्णन करते हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज के युद्ध, उनका यशोगान, उनकी वीरता, वीरता के विविध अंगों का वर्णन, छत्रपति की कूटनीति, उनकी राजनीति, उनका आतंक, उनकी वीरता के कारण शत्रुओं की हुई दुर्दशा आदि बातों को भूषण ने अपनी कविता के वर्ण्यविषय के रूप में चुना। कमोबेश रूप में ऐसा ही वर्णन उन्होंने छत्रसाल बुंदेला का भी किया।

छत्रसाल बुंदेला पर छत्रपति शिवाजी महाराज का बड़ा प्रभाव था। संभवतः इसी कारण छत्रपति शिवाजी के उपरोक्त गुणविशेषों को अपनाने का भरपूर प्रयास छत्रसाल बुंदेला ने किया। उनका कार्य भी कमोबेश रूप में छत्रपति शिवाजी की बनाई लीक का अनुसरण करता है। स्वाभाविक ही है, राष्ट्रीयता के जिस जज्बे के कारण भूषण को छत्रपति प्रिय थे, उसी कारण छत्रसाल बुंदेला भी प्रिय थे। रैयाराव चंपति के पुत्र छत्रसाल वस्तुतः छत्रपति शिवाजी महाराज के साथ कार्य करना चाहते थे। वे छत्रपति शिवाजी महाराज से मिले और राष्ट्र संवर्धन के लिए आवश्यक युद्धनीति, कूटनीति एवं प्रशासन नीति की शिक्षा उन्होंने शिवाजी महाराज ही से प्राप्त की। पश्चात राष्ट्रीयता के प्रचार–प्रसार हेतु छत्रपति शिवाजी ने छत्रसाल को पुनः बुंदेलखंड भेजा। कहा जाता है कि मात्र पाँच घुडसवार और पच्चीस तलवारबाजों के साथ मिलकर छत्रसाल ने मुगलों के खिलाफ संघर्ष शुरू किया। समय के अंतराल में छत्रसाल की तलवार ने एक इतिहास रचा जिसका वीर रसपूर्ण व राष्ट्र भक्ति जगाता वर्णन भूषण ने किया हैं–

''सांगन सों पेलि पेलि खग्गन सो खेलि खेलि,
समद सा जीता जो समद लौं बखाना है।
भूषन बुंदेला–मनि चंपति–सपूत धन्य,
जाकी धाक बचा एक मरद मियाँना है।
जंगल के बल से उदंगल प्रगल लूटा,
महमद अमीर खाँ का कटक खजाना है।
बीर–रस मत्ता जाते काँपत चकत्ता यारो,

कत्ता ऐसा बांधिये जो छत्ता बाँधि जाना है।''[4]

छत्रसाल के लिए भी भूषण अत्यंत आदरणीय थे क्योंकि वे छत्रसाल के आराध्य शिवछत्रपति के दरबारी कवि थे और अपनी वाणी के माध्यम से स्वदेशाभिमान की ज्योति निरंतर जलाये हुए थे। कहा जाता है कि भूषण–काव्य की राष्ट्रीयता से छत्रसाल इतने प्रभावित थे कि उन्होंने स्वयं भूषण की पालकी को कंधा दिया था अस्तु।

भूषण संस्कृति से प्रेरित होकर राष्ट्रीय चेतना जगाते थे। परिपाटी के अनुसार मंगलाचरण प्रस्तुत करते थे किंतु उसकी रचना भी वीर रस के अनुकूल हुआ करती थी। 'शिवराज–भूषण' का मंगलाचरण यहाँ दृष्टव्य है–

''विकट अपार भव पंथ के चले को,
श्रम हरन करन बिजना से ब्रह्म ध्याइए।
यहि लोक परलोक सुफल करन,
कोक नद से चरन, हिये आनि के जुड़ाइए।।
अलि–कुल–कलित–कपोल–ध्यान–ललित,
आनंद–रूप–सरित में भूषन अन्हाइये।
पाप–तरू भंजन, विघन–गढ़ गंजन,
जगत मन रंजन, द्विरद मुख गाइये।।''[6]

इसका अर्थ अपने आप में स्पष्ट है। भूषण ने गणेश जी को ब्रह्म के रूप में देखा है जिसमें मंगल वर्णन के पश्चात अंतिम दो पंक्ति में वे कहते हैं कि पाप–वृक्ष का भंजन करने वाले, विघ्न–गढ का खंडन करनेवाले, संसार के मन का रंजन करनेवाले दो दंतवाले गणेश जी का गान कीजिए। दृष्टव्य है, भूषण ने एकदंतवाले गणेश की प्रार्थना नहीं कराई। कहा जाता है कि परशुराम ने गणेश जी का एक दांत तोड़ दिया था। अतः वह हार की निशानी है। यही कारण है कि भूषण विजय के प्रतीक दो दंतवाले गणेश जी की आराधना करते हैं। गणेश वंदना के पश्चात वे दुर्गा के विजयिनी रूप की वंदना करते हैं। वह विजयिनी रूप जिसने मधु, कैटभ, महिषासुर, चंडमुंड, भंडासुर, रक्तबीज और विडालाक्ष का वध कर विजय प्राप्त की थी। तीसरी प्रार्थना वे सूर्य की करते हैं जो ज्ञान और प्रकाश प्रदान करता है। वैदिक प्रणाली के अनुसार जब भूषण राजवंश वर्णन करते हैं तब भी छत्रपति शिवाजी को ईश्वर का प्रतिरूप मानकर उनकी वंदना करते हैं। रायगढ़ का वर्णन करने हेतु उसकी तुलना इंद्रपुरी से करते हैं। जब छत्रपति शिवाजी महाराज का वर्णन वे करते हैं तब भी पुराणों से संदर्भ ग्रहण कर अपनी राष्ट्रीय चेतना के साथ–साथ सांस्कृतिक चेतना का परिचय देते हैं–

''इंद्र जिमि जंभ पर, बाडव सुअंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुल–राज है।
पौन बारिबाह पर, संभु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्त्रबाह पर राम–द्विजराज है।।
दावा द्रुम दण्ड पर, चीता मृग–झुंड पर,
'भूषन' बितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलिच्छ बंस पर सेर सिवराज है।।''[7]

यहाँ छत्रपति शिवाजी महाराज को इंद्र, राम, महादेव, परशुराम, कृष्ण की उपमा प्रदान की गई है। ऐसा मिथकीय प्रयोग भूषण ने मात्र वर्णन भर के लिए नहीं किया। वे ऐसे प्रयोग से जनता को भूली बिसरी संपन्न सांस्कृतिक विरासत याद दिलाना चाहते थे। भूषण–काव्य में ऐसे ढेरों उदाहरण मिलेंगे।

कवि भूषण ने छत्रपति शिवाजी महाराज और छत्रसाल बुंदेला को अपनी कविता का वर्ण्य विषय चुना। डॉ.भगवानदास तिवारी भूषण की राष्ट्रीयता को लेकर अत्यंत महत्वपूर्ण बात लिखी हैं। उनके मतानुसार– ''भूषण चंद्रगुप्त मौर्य, पृथ्वीराज चौहान और महाराणा प्रताप के समय में खोई हुई भारत की राष्ट्रीय स्वतंत्रता के पुनर्जागरण के उद्घोषक कवि थे। शिवाजी में उन्हें सैंकड़ों वर्षों से खोई हुई भारतीय स्वतंत्रता की भावना की ज्योति दिखाई दी और इसलिए उन्होंने अपनी वाणी को शिवचरित्र–गान से पुनीत किया।''[8]

यह शिवचरित्र–गान भूषण ने बड़े अद्‌भुत ढंग से किया। उन्होंने नायक शिवछत्रपति के सामने मुगल सम्राट औरंगजेब जैसा प्रतिनायक खड़ा किया। नायक को अपार यशसंपन्न दिखाना हो तो कमजोर प्रतिनायक की स्थापना को अयोग्य जानकर अपार बल, वैभव के धनी, अत्याचारी औरंगजेब का चित्र खींचा। भूषण इस बात को भी अधोरेखित करने से नहीं चूके कि छत्रपति शिवाजी महाराज को अकेले औरंगजेब से ही नहीं लड़ना पड़ा। बीजापुर, गोलकोंडा आदि के सुलतान भी कभी औरंगजेब के साथ तो कभी स्वतंत्र, छत्रपति शिवाजी से लड़ते रहे। भूषण ने इन सबको शरीर अंगरूप में देखकर, औरंगजेब को इन शरीरांगों का सिर बताकर 'अत्याचारी कलियुग' का सांगरूपक प्रस्तुत किया है। इस अत्याचारी कलियुग को साहस की तलवार पकड़े छत्रपति शिवाजी द्वारा खंडित किया है–

''साहिन मन समरत्थ जासु नवरंग साहि सिरू।
हृदय जासु अब्बास साहि बहुबल बिलास थिरू।।
एदिलसाहि कुतुब्ब जासु जुग भुज भूषन भनि।
पाय म्लेच्छ उमराय काय तुरकानि आनि गनि।।
यह रूप अवनि अवतार धरि जेहि जालिम जग दंडियब।
सरजा सिव साहस खग्ग गहि कलियुग सोई खल खंडियब।।''[9]

तो कभी भूषण अपने प्रतिनायक को दुर्योधन से दुगुना दुष्ट बताते हैं। युधिष्ठिर के धर्म, भीम के बल, अर्जुन की प्रतिज्ञा, नकुल की बुद्‌धि और सहदेव के तेज के प्रभाव से दुर्योधन के बनाये लाक्षागृह से पांडव बच निकले थे। भूषण कहते हैं कि शिवाजी तो इनसे अधिक पराक्रम दिखाते हुए, उक्त पाँचों गुणों को धारण कर दिन दहाडे अकेले ही लाखों पहरेदारों के बीच में से निकल आये थे। वे छत्रपति शिवाजी की तुलना कभी नृसिंह, कभी रामचंद्र, कभी कृष्ण के रूप में करते हुए उन्हें अवतारी बताते हैं। अपने नायक का इस प्रकार वर्णन कर भूषण न केवल युगीन सामूहिक चेतना को जागृत करने का प्रयास करते हैं बल्कि पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों में आस्था प्रकट कर जनसाधारण में उस विश्वास को बनाये रखने का महनीय कार्य भी करते हैं।

कवि भूषण अपने नायक को वीर बताते हैं और छत्रपति शिवाजी महाराज को युद्‌धवीर, दयावीर, दानवीर और धर्मवीर के रूप स्थापित करते हैं। छत्रसाल बुंदेला भी ऐसे वीर थे जिन्होंने चारों प्रकार का वीरत्व पा लिया था। भूषण सभी प्रकार की वीरता का बढ़चढ़कर वर्णन करते हैं। वीरों में युद्‌ध–वीर को श्रेष्ठ बताया जाता है। संभवतः इसी कारण भूषण छत्रपति शिवाजी महाराज की युद्‌धवीरता का ओजपूर्ण वर्णन कर राष्ट्र और राष्ट्रीयता की महिमा का गान करते हैं।

''छूटत कमान अरू गोली तीर बानन के,
मुसकिल होत मुरचानहुँ की ओट में।

ताहि समै सिवराज हुकुम कै हल्ला कियो,
दावा बांधि परा हल्ला बीर बर जोट में।
'भूषन' भनत तेरी हिम्मति कहाँ लौं कहाँ,
किम्मति इहाँ लगि है जाकी भट झोट में।
ताव दै दै मूंछन कँगूरन पै पाँव दै दै,
अरि मुख घाव दै दै कूदि परैं कोट मैं।।''[10]

छत्रपति शिवाजी महाराज की युद्धाज्ञा के साथ ही सैनिक उत्साहित होकर किलों में कूद जाते हैं। मूंछों पर ताव दे देकर, कंगूरों पर पाँव देकर शत्रु को घायल करते मराठा सेनानी युद्धोचित उत्साह और उत्तेजना जगाते हैं।

अपने राजा की आज्ञा को सिर आँखों पर लेनेवाली शिवाजी की सेना का वर्णन करते समय भूषण वीर के सहयोगी सभी रसों का प्रयोग करते हैं। एक बीभत्स रस का वर्णन दृष्टव्य है–

''आई चतुरंग सैन सिंह सिवराज जू को,
देखि पातसाहन की सेना धरकत हैं।
जुरत सजोर जंग जोम भरे सूरन के,
स्याह स्याह नागन लौं खग्ग खरकत हैं।।
भूषन भनत भूत प्रेतन के कंधन पै,
टाँगी मृत बीरन की लोथें लरकत हैं।
कालमुख भेटे भूमि रूधिर लपेटे,
परकटे पठनेटे मुगलेटे फरकत हैं।''[11]

शिवराज की चतुरंग सेना देख बादशाह की सेना की बढ़ती धडकन, काली नागन–सी तलवारें, भूत–प्रेतों के कंधोंपर टँगी मृत वीरों की लाशें, हाथपैर कटे रक्तसने पठान, मुगलों की फड़कनें आदि का वर्णन कर भूषण जनसामान्यों के मन में वीरश्री का भाव जगाने में सफल हुए हैं।

छत्रपति शिवाजी का शौर्य, अपनी माटी के लिए प्रतिबद्धता का वर्णन करते–करते भूषण उनके आतंक का वर्णन करते हैं जो तत्कालीन समय में चहुँओर छाया हुआ था। हास्य का किंचित पुट मिला यह वर्णन राष्ट्रीय भावना को वृद्धिगत करता है।

''छूटयो है हुलास आमखास एक संग छूटयो
हरम सरम एक संग बिनु ढंग ही।
नैनन तें नीर धीर छूटयो एक संग छूटयो
सुख–रूचि मुख–रूचि त्यों ही बिन रंग ही।।
भूषनबखानै सिवराज मरदाने तेरी,
धाक बिललाने न गहत बल अंग ही।
दक्खिन के सूबा पाय दिली के अमीर तजैं,
उत्तर की आस जीव–आस एक संग ही।।''[12]

सर्जा शिवाजी की धाक से प्रसन्नता और आम–खास का बैठना, जनानखाना और शरम, हृदय से धैर्य और आँखों से आँसू, सुख–कामना और मुख का स्वाद सबकुछ एकसाथ छूट रहा है। शिवाजी का आतंक कुछ ऐसा है कि दक्षिण की सूबेदारी मिलने के उपरांत दिल्ली का सरदार पुनः उत्तर आने और जिंदा बचने की आस दोनों का ही त्याग कर देता है।

शिवाजी महाराज के आतंक का वर्णन करने के क्रम में भूषण कई स्थानों पर अतिशयोक्ति कर बैठे हैं तो कई बार ऐतिहासिक तथ्यों का अतिक्रमण भी हो गया है। निम्नांकित छंद उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है–

ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारीं,

ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहातीं हैं।
कंद मूल भोग करैं कंदमूल भोग करैं,
तीन बेर खातीं ते वै तीन बेर खातीं हैं।।
भूषन सिथिल अंग भूषन सिथिल अंग
बिजन डुलातीं ते वै बिजन डुलातीं हैं।
भूषन भनत सिवराज बीर तेरे त्रास,
नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ातीं हैं।।[13]

शत्रुपक्षके ऊँचे महलों में रहनेवाली स्त्रियाँ वनगुफापर्वतों में रह रही हैं, मेवा मिठाई खानेवाली स्त्रियाँ कंदमूल खा रही हैं। तीन बार भोजन करनेवाली स्त्रियाँ मात्र तीन बेर खा रही हैं। जिनके अंग आभूषणों के बोझ से शिथिल हुआ करते थे, उनके अंग भूख के मारे शिथिल हैं। जो स्त्रियाँ पंखा झलती आराम फरमाती थीं, वे वन–वन भटक रही हैं और जो हीरे जवाहरातों में तुलती थीं, वे नग्न घूम रही हैं। यह सब 'सिवराज बीर तेरे त्रास' के कारण हो रहा है। कोई कैसे विश्वास करें ?

इतिहास गवाह है, छत्रपति शिवाजी महाराज का आदेश था कि धर्मग्रंथ, धर्मस्थल और स्त्रियों को कभी कोई नुकसान न पहुँचाया जाए। सन 1657 में कल्याण के बीजापुरी शासक मुल्ला अहमद की पुत्रवधु को आबाजी सोनदेव ने बंदिनी बनाकर छत्रपति शिवाजी के सामने प्रस्तुत किया था। उसका अभूतपूर्व सौंदर्य देखकर छत्रपति ने कहा था कि 'यदि हमारी माँ इतनी सुंदर होतीं तो हम भी सुंदर होते।' पश्चात उन्होंने उस मुसलमान लड़की को मातृवत सम्मान देकर अपने परिजनों के पास भेजा था। अतः 'शिवराज के त्रास' के मारे शत्रुस्त्रियों में मची भगदड कवि कल्पना मात्र है। कई बार ऐसे वर्णन जोश तो बढ़ाते हैं लेकिन उसकी वजह से राष्ट्रीय चेतना की पवित्रता को धक्का पहुँचने का खतरा भी होता है। जोशपूर्ण राष्ट्रीय चेतना जगाने के इच्छुक भूषण कई बार ऐसे स्थानों पर किंचित गफलत कर जाते हैं।

शत्रुओं पर शिवाजी के आतंक का बढ़चढकर वर्णन करनेवाले भूषण इस बात को भी स्पष्ट करते हैं कि शरणागत शत्रु को वे कभी नुकसान न पहुँचाते थे। 'एक अचंभव होत बडो तिन ओठ गहे अरि जात न जारे।' कहकर भूषण दयावीर शिवाजी का चरित्र चित्रण करते हैं। 'पाय गहे उनहूँ को रोज धाइयतु है' कहकर शरणागत को अभयदान देने के उनके गुण का बखान करते हैं। यहाँ तक कि जिन हिंदुओं ने छत्रपति शिवाजी को कष्ट पहुँचाया, उन स्वजाति बंधुओं को भी वे क्षमा कर देते थे।भूषण छत्रपति शिवाजी महाराज के दानवृत्ति का भी उदात्त वर्णन करते हैं। महाराष्ट्र ही नहीं, भारत के इतिहास में छत्रपति शिवाजी का दान विख्यात है। भूषणस्पष्ट करते हैं कि कामधेनु और कल्पवृक्ष का बखान तो केवल पुस्तकों में पाया जाता है जबकि छत्रपति शिवाजी वास्तव में इस प्रकार दान देते हैं। ''कामना दानि खुमान लखे न कछु सुररूख न देवगऊ है।'' जदुनाथ सरकार ने भी अपनी पुस्तक 'Shivaji and His Times' में शिवाजी महाराज के दान का वर्णन किया है। भूषण न केवल उनके दातृत्व का वर्णन करते हैं, बल्कि अन्य राजाओं के दान और शिवाजी महाराज के दान में निहित अंतर भी स्पष्ट करते हैं।

दै दस पाँच रूपैयन को जग कोऊ नरेस उदार कहायो।
कोटिन दान सिवा सरजा के सिपाहिन साहिन को बिचलायो।।
भूषन कोउ गरीबनसों भिरि भीमहूँ ते बलवंत गनायो।
दौलति इन्द्र समान बढ़ौ पै खुमान के नेक गुमान न आओ।।[14]

भूषण, छत्रपति शिवाजी महाराज के युद्धवीर रूप पर जितने रीझे हैं, उतना ही उन्हें शिवाजी का धर्मवीर रूप प्रिय है। भूषण को शिवाजी महाराज केवल एक राजनीतिक पुरूष होने के नाते ही पसंद न थे बल्कि वे मानते थे कि तत्कालीन समय में सामाजिक–सांस्कृतिक–धार्मिक चेतना को जगानेवाले एक महापुरूष के रूप में शिवाजी का कार्य अविस्मरणीय है। विशेष रूप औरंगजेब की

धार्मिक कट्टरता, हिंदुओं पर लगे अन्यायी कर, हिंदुओं पर होते असीमित अत्याचार और उनके धर्मांतरण के निरंतर होते प्रयासों की पृष्ठभूमि पर उभरे धर्मवीर शिवाजी ने सांस्कृतिक नव जागरण किया। भूषण शिवाजी महाराज के इस महान कार्य को अंकित करने से भला कैसे चूकते ? छत्रपति शिवाजी महाराज ने वेदों–पुराणों–धर्मग्रंथों की रक्षा की। रामनाम ले पाने की छूट जनसामान्यों को उनकी वजह से मिल पाई। हिंदुओं की शिखा, जनेऊ और गले की माला मात्र छत्रपति के कारण टिक पाई। धर्म और मंदिर केवल छत्रपति के कारण बचे रह पाये आदि बातों का उल्लेख भूषण बड़े गर्व के साथ करते हैं। साथ ही, सिपाहियों की रोटी और राजाओं के राज्य की सीमा का रक्षण करनेवाले शिवाजी की महिमा गाते हैं–

''वेद राखे बिदित पुरान परसिद्ध राखे,
राम नाम राख्यौ अति रसना सुधर में।
हिंदुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की,
काँधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में।।
मीड़ि राखे मुगल मरोडि राखे पातसाह बैरी,
पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।
राजन की हद्द राखी तेगबल सिवराज,
देव राखे देवल, स्वधर्म राख्यो घर में।।[15]

'शिवा बावनी' में भी भूषण यह स्पष्ट करने से नहीं चूके कि ''शिवाजी न होते तो सुनति होती सबकी''

भूषण छत्रपति शिवाजी महाराज की 'कूट नीति', 'गुरिल्ला युद्ध' करने की उनकी युक्ति का भी भरपूर वर्णन करते हैं। छत्रपति शिवाजी के राष्ट्र प्रेम का एक उदाहरण पुरंदर की संधि के रूप में दिया जाता है। यह शिवाजी महाराज की कूटनीति का भी उत्कृष्ट उदाहरण है। भूषण पुरंदर की संधि का बढ़चढ़कर वर्णन करते हैं–

बेदर कल्याण दे परेंडा ऐसे कोट साहि,
एदिल गँवाए हैं नवाइ निज सीस कौं।
भूषन भनत साहिनगरी कुतुबसाहि देकर,
गँवाइ रामगिरि से गिरीस कौं।।
भौंसिला भुवाल साहितनै गढ़पाल दिन,
दोउ न लगाए गढ़ लेत पंचतीस कौं।
सरजा सिवाजी जयसाह ते सुहाई लीबै,
सौ गुना बड़ाई गढ़ दीन्हें हैं दिलीस कौं।।[16]

अर्थात् जिस औरंगजेब को आदिलशाह ने बीदर, कल्याण और परेंडा के किले तथा कुतुबशाह ने रामगिरी का इलाका सिर झुकाकर सौंप दिया, उसी औरंगजेब को मिर्जा राजे जयसिंह के कहने पर शिवाजी महाराज ने पैंतीस किले दे दिए।

ऐसा करके शिवाजी महाराज ने जयसिंह के साथ होनेवाली लड़ाई टाल दी जिससे दोनों ओर से होनेवाली हिंदू–हानि भी टली यह सारे किले शिवाजी महाराज ने दोबारा प्राप्त किये लेकिन संधि के समय दो हिंदुओं में फूट न पड़ने दी। भूषण छत्रपति की इस राष्ट्रीय भावना से प्रेरित कूटनीति का गौरव करते हैं। औरंगजेब की नज़रकैद से बचकर भागकर शिवछत्रपति जब अपने आत्मसम्मान की रक्षा करते हैं तो भूषण उसे देश के आत्मसम्मान के रूप में देखते हैं। शिवराज को 'कीन्हों न सलाम न बोले बचन सियरे' के रूप में अपने आत्मसम्मान की रक्षा करते देखकर भूषण का सिर राष्ट्र गौरव की भावना से उन्नत हो उठता है।

निःसंदेह, भूषण प्रथम राष्ट्रीय कवि हैं। उन्होंने पूरे भारत–भ्रमण के बाद शिवाजी महाराज की नीति में निहित राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक प्रेम को नमन किया था। उन्होंने शिवाजी महाराज के जीवन की लगभग सभी महत्वपूर्ण घटनाओं–यथा–जावळी विजय, अफजल खान वध, शाइस्तांखान विजय, पुरंदर संधि, सिंहगढ़ विजय, आग्रा–भेंट व पलायन आदि का प्रखर वर्णन किया है। उनकी दृष्टि में राष्ट्र, राष्ट्राभिमान सर्वोपरि था अतः उसका जतन करनेवाले शिव छत्रपति व छत्रसाल को उन्होंने अपने काव्य का नायक चुना। बावजूद इसके भूषण की राष्ट्रीय चेतना पर हिंदुत्व का आरोपण किया जाता है। उन पर आक्षेप लगाया जाता है कि उनकी कविता सांप्रदायिक है। वैसे वास्तविकता यह है कि भूषण मुसलमानों के विरोधी नहीं थे। उन्होंने हिंदुओं के सगुण और मुस्लिमों के निर्गुण को समान उदारता से दान दिया–

चाहत निर्गुण सगुण को ज्ञानवंत की बान
प्रकट करत निर्गुण सगुण सिवा निवाजी दान [17]

भूषण औरंगजेब का तिरस्कार करते थे, यह बात सत्य है लेकिन इसका कारण औरंगजेब का मुसलमान होना नहीं बल्कि उसकी दमनकारी नीतियाँ थीं। औरंगजेब की हिंदू विरोधी कट्टरता की प्रतिक्रिया के रूप में भी जिन छत्रपति शिवाजी ने मुसलमान विरोध नहीं किया, उन छत्रपति का आदर्श भूषण के सम्मुख था। उन्होंने जातिधर्म के रूप में कभी इस्लाम का विरोध नहीं किया। दृष्टव्य है कि रीतिकाल तक आते–आते मुसलमान भारत–वर्ष में बस चुके थे, वे इस भूमि का अंग बन चुके थे। अतः भूषण को धार्मिक सद्भाव अपेक्षित था, धार्मिक कट्टरता नहीं। राष्ट्र के रूप में उन्होंने हिंदू और मुसलमान दोनों का सहअस्तित्व स्वीकार किया। जिस औरंगजेब के दोष दिखाते भूषण थके नहीं; उसी औरंगजेब के पूर्वजों की वे जी खोलकर प्रशंसा करते हैं। मात्र इतना ही नहीं; अकबर बादशाह को राम–कृष्ण जैसे अवतारों की श्रेणी में बैठाते हैं–

''सत युग त्रेता औ द्वापर कलियुग माहि,
आदि भयो नाहि भूप तिनहूँ तै अगरी।
अकबर बब्बर हुमायूँ साह सा मन सो,
स्नेह ते सुधारी हेय हीरन ते समारी।।[18]

भूषण तो औरंगजेब को बाबर और अकबर का यश स्थिर रखने का उपदेश देते हुए कहते हैं–

दौलत दिली की पाप कहा ये आलमगीर
बब्बर अकबर के बिरद बिसारे तै

भूषण के सांप्रदायिक सद्भाव का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि वे देश और धर्मगत एकता की दृष्टि से हिंदू–मुस्लिम अंतर्धर्मीय विवाह के समर्थक थे–

मैजे लिंखी लगन शुभ गानिक निजाम वेग,
इतै गुजरात उतै गंग ज्यों पतारा की।
एक जस लेत अति फेरा गढहू कौ,
खंडि नव खंड दिये दान ज्यों अवतारा की।
ऐसे ब्याह करत विकट साहू साहन सों,
हद्द हिंदुआन जैसे तुरूक तारा की।
आवत वरात सजे ज्वान देस दच्छिन के,
दिल्ली दुलहिन भई सहर सितारा की।।[19]

राष्ट्र निर्माण के लिए हिंदू–मुस्लिम विवाह तक का समर्थन करनेवाले भूषण का राष्ट्र प्रेम अवर्णनीय है। इससे मिला–जुला सांस्कृतिक आदान प्रदान भी उन्होंने सिर आँखों पर लिया। वे

जयपुर नरेश मानसिंह और बीरबल की प्रशंसा मात्र इसलिए करते हैं क्योंकि वे हिंदू–मुस्लिम विवाह के समर्थक थे।

5. निष्कर्ष :

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि, एक अच्छे राष्ट्र के निर्माण हेतु, उस राष्ट्र की संस्कृति के संवर्धन हेतु जो जो करना आवश्यक है वह सब महाकवि भूषण ने किया। दुर्भाग्य से भूषण–काव्य में निहित राष्ट्रीय–सांस्कृतिक चेतना का उतना प्रचार प्रसार नहीं हुआ जितना कि होना चाहिए था। इसके अपनेकारण हैं। इसके महत्वपूर्ण कारणों की ओर इंगित करते हुए हरिश्चंद्र दीक्षित कहते हैं– ''महाकवि भूषण ने अपनी कविता द्वारा राष्ट्र का संगठन करके औरंगजेबी–साम्राज्य के नाश में अपना योग दिया। बाद के मुसलमान शासक तथा अंग्रेज अधिकारी इस राष्ट्रीय भावना को पनपने नहीं देना चाहते थे। यही कारण है कि ग्रियर्सन तथा गार्सां द तासी आदि अंग्रेज फ्रेंच लेखकों ने भूषण कवि की कहीं चर्चा नहीं की ... मुसलमान शासकों ने भी खूब झूठी किंवदंतियों द्वारा यथार्थता का लोप करने का प्रयत्न किया था। अब भी यही प्रयत्न किया जा रहा है। समाज का एक वर्ग उसे अब भी सांप्रदायिक कहकर नकार रहा है।''[20]

निःसंदेह, आज भूषण को सांप्रदायिकता के कटघरे से निकालकर राष्ट्रीय एकात्मता और सांस्कृतिक चेतना के कवि के रूप में पुनर्मूल्यांकित करना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। वर्तमान समय में जो राष्ट्रीयता का अभाव और सांस्कृतिक कलुष छाया हुआ है, उस कालिमा को छांटने की दृष्टि से भूषण की राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक सद्भावना का पाठ पढ़ाती कविता अत्यंत उपकारक सिद्ध हो सकती है।

6. संदर्भग्रंथ सूची :

1. संक्षिप्त भूषण, डॉ.भगवानदास तिवारी, साहित्य भवन प्रा.लि., इलाहाबाद, छंद संख्या–68
2. राष्ट्र की उत्पत्ति और भारतीय राष्ट्रीयता–श्री नर्मदेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, त्रिपथगा, जनवरी 62, पृ.25
3. दी आउट लाइन्स ऑफ हिस्ट्री, एच.जी.वेल्स, पृष्ठ–992
4. साहित्य कोश, प्रथम संस्करण, पृ.653
5. महाकवि भूषण, भगीरथप्रसाद दीक्षित, छत्रसाल प्रशंसा, छंद संख्या– 06
6. भूषण–ग्रंथावली, पं.राजनारायण शर्मा, हिंदी भवन, इलाहाबाद, छंद संख्या–01
7. भूषण–ग्रंथावली, पं.राजनारायण शर्मा, हिंदी भवन, इलाहाबाद, छंद संख्या–56
8. भूषण, भगवानदास तिवारी, साहित्य भवन प्रा.लिमिटेड, इलाहाबाद –3,पृष्ठ– 470
9. भूषण–ग्रंथावली, पं.राजनारायण शर्मा, हिंदी भवन, इलाहाबाद, छंद संख्या–62
10. महाकवि भूषण, शिवा बावनी भगीरथ प्रसाद दीक्षित, छंद संख्या–19
11. संक्षिप्त भूषण– डॉ.भगवानदास तिवारी, साहित्य भवन प्रा.लि., इलाहाबाद, छंद संख्या –44
12. भूषण–ग्रंथावली, पं.राजनारायण शर्मा, हिंदी भवन, इलाहाबाद, छंद संख्या–150
13. संक्षिप्त भूषण– डॉ.भगवानदास तिवारी, साहित्य भवन प्रा.लि., इलाहाबाद, छंद. संख्या–52
14. भूषण–ग्रंथावली, पं.राजनारायण शर्मा, हिंदी भवन, इलाहाबाद, छंद संख्या– 196
15. संक्षिप्त भूषण– डॉ.भगवानदास तिवारी, साहित्य भवन प्रा.लि., इलाहाबाद, छंद. संख्या–31
16. संक्षिप्त भूषण– डॉ.भगवानदास तिवारी, साहित्य भवन प्रा.लि., इलाहाबाद, छंद. संख्या–65
17. भूषण–ग्रंथावली, पं.राजनारायण शर्मा, हिंदी भवन, इलाहाबाद, छंद.संख्या–145
18. भूषण ग्रंथावली, दीक्षित, फुटकर छंद–4
19. भूषण ग्रंथावली, पं.राजनारायण शर्मा, हिंदी भवन, इलाहाबाद, छंद संख्या– 29
20 भूषण का वीर काव्य, हरिश्चंद्र दीक्षित, शोध प्रबंध प्रकाशन, दिल्ली–7, पृष्ठ–104–105

7. वेब लिंक :

www.hindisamay.com

स्वमूल्यांकन

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. इनमें से रीतिकालीन काव्य की विशेषता कौनसी है ?
   अ श्रृंगारिकता ब अलंकार प्रधानता
   क लक्षण ग्रंथों का निर्माण ड उपर्युक्त सभी
2. 'अकबर बब्बर हुमायूँ साह सा मन सो, स्नेह ते सुधारी हेय हीरन ते समारी'
   उपर्युक्त पंक्तियों में कविराज भूषण किनकी प्रशंसा करते हैं?
   अ छत्रपति शिवाजी ब छत्रसाल
   क मुगल शासक ड इनमें से कोई नहीं
3. 'Shivaji And His Times' पुस्तक के लेखक का नाम बताइए।
   अ जदुनाथ सरकार ब हरिश्चंद्र दीक्षित
   क नर्मदेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी ड डॉ.भगवानदास तिवारी
4. पुरंदर की संधि किन दो शासकों के बीच हुई थी ?
   अ छत्रसाल बुंदेला–अकबर ब छत्रपति शिवाजी–औरंगजेब
   क राजा मानसिंह–शाहजहान ड बीजापूर के सुल्तान–औरंगजेब
5. छत्रसाल ने युध्दनीति, कूटनीति एवं प्रशासननीति की शिक्षा किनसे प्राप्त की ?
   अ छत्रपति शिवाजी ब मिर्जा राजे जयसिंह
   क विकल्प 1 और 2 ड इनमें से कोई नहीं

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रीतिकालीन सामाजिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।
2. 'भूषण के काव्य में चित्रित छत्रपति शिवाजी' पर टिप्पणी लिखिए।
3. भूषण–काव्य में अभिव्यक्त वीर रस को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
4. भूषण की काव्य कला पर प्रकाश डालिए।
5. रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों पर विचार कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भूषण के काव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना पर विस्तार से प्रकाश डालिए।
2. रीतिकालीन राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।
3. 'घोर श्रृंगारिकता के युग में भी भूषण ने काव्य रस के रूप में राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए उपयुक्त वीर रस का चयन किया', कथन की समीक्षा कीजिए।
4. भूषण के काव्य में निहित युग–चेतना को स्पष्ट कीजिए।
5. 'धार्मिक सद्भाव एवं राष्ट्रप्रेम की दृष्टि से भूषण का काव्य उच्च कोटि का है', विस्तारपूर्वक लिखिए।